B.A. Part I (2) डॉ. [illegible]
V. B. 14/7/21 क्रमशः

इन्हें शैव कहते हैं। क्योंकि इन्होंने राधा-कृष्ण [illegible] शक्ति आराधना के साथ-साथ दुर्गा, शिव [illegible] की भी स्तुति की है। इस कारण यह ठीक है कि आधुनिक मैथिलों की तरह ये शिव, कृष्ण तथा दुर्गा तीनों को मानते हैं। किसी एक देवता के ये उपासक नहीं हैं। ये चन्दन, सिन्दूर और अक्षत तीनों एक साथ लगाते हैं।

विद्यापति एक उच्चकोटि के कवि हैं। इनके पदों का प्रचार-प्रसार भूतकाल के मंदिरों से लेकर कोहबर-घर तक तथा गरीबों की पर्णकुटियों से लेकर राजाओं की अट्टालिकाओं तक बराबर बना रहा है।

कोई किसी का आदर तभी करता है जब उसका हृदय हो। एक विद्युत्कारी हाथ में इकतारा लिये 'निराकार' कहकर हृदय देवता को ओलाहना करते-करते तभी आपको आप को भूल जाता है उसी प्रकार एक व्यक्ति [illegible] बिन्दु का ध्यान किस तरह [illegible] होकर अपने प्राणों से प्यारे अश्रु बिन्दु गिराने लगता है। यदि बालबन्धु की कोहबर में [illegible] कामिनी [illegible] नव वर-वधू के हृदयों को एक अलौकिक आनन्द में डुबो देती है तो बालबन्धुक — 'नयनक पानसन बालमु अनेकार रे, देखल धनि देह' पढ़ता हुआ माधुर्य कल्पना से रोमांचित हो उठता है।

विद्यापति शृंगारिक कवि थे। उन्होंने राधाकृष्ण के माध्यम से उनकी प्रेमपरक लीलाओं का अत्यन्त प्रेमोत्पादक वर्णन किया है। संयोग शृंगार के मादक चित्र हैं तथा वियोग व्यथा का मार्मिक चित्रण हृदय की तरलता और गहराई दोनों की अनुपम झाँकियाँ इनकी कविता में हैं। वस्तुतः विद्यापति के शृंगार वर्णन में नग्न मांसलता का अभाव है और न ही उसे बैठे ठाले का विलास ही कहा जा सकता है। संयोग शृंगार के साथ-साथ इनका वियोग वर्णन भी देखने लायक है। बलभद्र आदि दो चार को छोड़कर हृदय वेदना का ऐसा सूक्ष्म वर्णन प्रायः नहीं देखा जाता। विद्यापति की विरह वर्णन प्रेमिका के हृदय की तरह गीत है — इसमें वेदना है, व्याकुलता है, कोई हाय-हाय नहीं है। यहाँ विरह बिहारी की राधा सा वेदना है।

क्रमशः —